

आदेश पत्रक - ता०.....से.....तक

जिला....., सं०....., सन् १९.....

केस का प्रकार.....

आदेश की क्रम संख्या कीस तारीख १	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर २	आदेश पर की गई कार्रवाई के बारे में टिप्पणी, तारीख-सहित ३
	<p style="text-align: center;"><b>न्यायालय आयुक्त कोशी प्रमंडल, सहरसा</b></p> <p style="text-align: center;"><b>भूमि विवाद अपील वाद संख्या: 264/2012</b></p> <p style="text-align: center;">शिवजी शर्मा एवं अन्य — अपीलार्थीगण वनाम रामोतार शर्मा एवं अन्य — रेष्याण्डेन्ट्स/विपक्षीगण</p> <p style="text-align: center;"><b>—:आदेश:—</b></p> <p>प्रस्तुत अपील वाद अपीलकर्ता के द्वारा भूमि सुधार उप-समाहर्ता, सहरसा के द्वारा पारित आदेश दिनांक: 23.06.2012 ई० अंदर वाद संख्या- 254/11 के विरुद्ध खिलाफ रेष्याण्डेन्ट के दाखिल किया गया है।</p> <p>वाद पुकारा गया। उभय पक्षों के विज्ञ अधिवक्ताओं को सुना तथा अभिलेख पर रक्षित कागजात का अवलोकन किया।</p> <p>प्रस्तुत अपीलवाद में विवादी जमीन मौजा: सहरसा, सर्वे वार्ड नं० 12 थाना नं० 189 अंचल: सहरसा, जिला: सहरसा के खाता नया 523, 524, 525, 528, 529 की भूमि में आवेदक का 1/4 अंश विवादी भूमि है।</p> <p>निम्नन्यायालय एवं इस न्यायालय के समक्ष दायर वाद में संक्षेप में मामला यह है कि निम्नन्यायालय के अर्जी आवेदन के पारा: 14 के द्वारा निम्नन्यायालय से रेष्याण्डेन्ट्स/वादीगण के हिस्सा 1/4 भाग की जमीन का अलग तख्ताबंदी किये जाने संबंधी अनुतोश की मांग की गई।</p> <p>अपीलार्थीगण/विपक्षीगण के विज्ञ अधिवक्ता बहस के क्रम में कथन करते हैं कि बंटवारा पूर्व से जारी अधिकार का सहहिस्सेदारों, भूमि के सह मालिकों के बीच पुर्नबंटवारा या समायोजन है जो कि व्यवहार न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आता है वो विधि के प्रावधान के अनुसार बंटवारा का प्रथम चरण स्वत्व/अधिकार का निर्धारण वो दूसरा चरण बंटवारा वो तीसरा चरण execution है। अतएवं स्वत्व का निर्धारण वो बंटवारा विज्ञ भूमि सुधार उपसमाहर्ता द्वारा नहीं किया जा सकता है।</p>	

अपीलार्थीगण/विपक्षीगण के विज्ञ अधिवक्ता बहस के क्रम में यह भी कथन करते हैं कि अपीलार्थी/प्रतिवादी के पिता कुसुम लाल शर्मा द्वारा अतिरिक्त भूमि को विभिन्न व्यक्तियों को बिक्री कर दिया गया। केता वाद खरीदगी के उक्त भूमि पर दखलकार चले आते हैं बतलाया गया।

अपीलार्थीगण/विपक्षीगण के विज्ञ अधिवक्ता बहस के क्रम में यह भी कथन करते हैं कि रेस्पोंडेन्ट/वादी का प्रश्नगत भूमि में एक ईच भी भूमि उनके दखल में नहीं है अतएवं उक्त पक्षकारों के बीच प्रश्नगत भूमि पर समेकित अधिकार /स्वत्व एवं समेकित दखल नहीं है अतएवं रेस्पोंडेन्ट/वादी का दावा गलत बतलाते हैं।

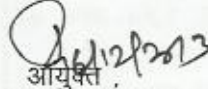
अपीलार्थी/विपक्षी अपने दावे के समर्थन में लिखित बहस के साथ शिवजी शर्मा के नाम से वर्ष 11-12 एवं 12-13 का मालगुजारी रसीद की छाया प्रति, कुसुम लाल शर्मा द्वारा रामकृष्ण शर्मा के पक्ष में केवाला दस्तावेज दिनांक 08.06.73 की छाया प्रति एवं कुसुम लाल शर्मा द्वारा तिलो शर्मा के पक्ष में केवाला दस्तावेज 23.02.79 की छाया प्रति दाखिल किये हैं।

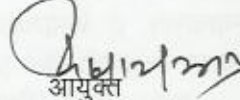
रेस्पोंडेन्ट्स/वादीगण के विज्ञ अधिवक्ता बहस के क्रम में कथन करते हैं कि विवादी जमीन नथर शर्मा की है तथा नथर शर्मा को चार लड़का जागो शर्मा वो गुनो शर्मा वो रामेश्वर शर्मा वो कुसुम लाल शर्मा हुए वो आवेदक कुसुम लाल के लड़के हैं। नथर शर्मा को एक बंशवृक्ष वाद पत्र में दी गयी। विवादी जमीन का आरधूर देकर बंटवारा नहीं हुआ तथा आपसी सहूलियत के अनुसार वादी एवं प्रतिवादीगण विवादी जमीन जोत आबाद एवं भोग तस्सरुफ करते हैं जिसमें बराबर झिक- झिक एवं कवाहत होता है तथा रेस्पोंडेन्ट/वादी के दखल कब्जा की जमीन से बेदखल करने पर आतुर हैं। रेस्पोंडेन्ट/वादी विवादी भूमि के लिए प्रतिवादीगण को बंटवारा कागजात बना देने का आग्रह करते रहे लेकिन अपीलार्थी/विपक्षीगण तैयार नहीं हुए इसलिये बतौर कागजी प्रमाण बंटवारा के लिए रेस्पोंडेन्ट /वादी की ओर से अपीलार्थीगण/विपक्षीगण के विरुद्ध निम्नन्यायालय में वाद दायर की गयी थी जिसमें विज्ञ निम्नन्यायालय द्वारा विवादी भूमि के मद संख्या 01 की भूमि में रेस्पोंडेन्ट/वादी का दावा 01 अंश वो अपीलार्थीगण/विपक्षी संख्या-1,2,3, एवं 4 का 01 अंश वो प्रतिवादी संख्या 5, 8, 09 का 01 अंश तथा अपीलार्थी/प्रतिवादी संख्या 06 ,7, एवं 10 का 01 अंश के आधार पर रेस्पोंडेन्ट/वादी एवं अपीलार्थीगण/विपक्षीगण के अंश के मुताबिक बंटवारा वाद की स्वीकृती को सही बतलाते हैं।

रेस्पोंडेन्ट/वादी निम्न न्यायालय के समक्ष अपने दावे के समर्थन में हाल सर्वे खतियान की छाया प्रति एवं इनफारमेशन की छाया प्रति दाखिल किये थे।

उभय पक्षों के विज्ञ अधिवक्ताओं को सुनने एवं अभिलेख पर रक्षित कागजात के सुक्ष्म अवलोकनोपरान्त पाया कि विज्ञ निम्नन्यायालय द्वारा पारित आदेश न्यायोचित प्रतीत होता है। अस्तु अपील वाद खारिज किया जाता है। इसी के साथ वाद निस्तारित किया जाता है।

लेखापित एवं संशोधित।

  
आयुक्त  
कोशी प्रमंडल, सहरसा

  
आयुक्त  
कोशी प्रमंडल, सहरसा